Vol. III
Number-2
ISSN 2320-4710
Jan.-Dec. 2014

THOUGHTS ON EDUCATION

A PEER REVIEWED JOURNAL

AN INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION & HUMANITIES

APH PUBLISHING CORPORATION

Scanned by CamScanner

ISSN : 2320-4710

THOUGHTS ON EDUCATION

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. III, Number - 2 January-December, 2014

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

Scanned by CamScanner

CONTENTS

Indian Food Processing Industry: Analytics of Structure, Opportunities and Challenges — 1
J. R. Meena

Widows Across the Ages in Hindu India: An Exploration of their Victimization — 16
Dr. Shweta Singh

Financing of Investment and Liberalization — 26
Alok Dash

Gandhi's Commitment to Moral World View : An Analysis — 34
G.N. Trivedi

Strengthening Ecotourism: Insights from Tourists' Awareness and Willingness to Travel to Eco-Destinations — 40
Garima Gupta, Sonika Nagpal and Pooja Chopra

गोरख के भाव और भाषा का कबीर पर प्रभाव — 49
डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे

Growth and Profitability of Firms — 57
Alok Dash

मीरा : पुरूष दासता से मुक्ति का स्वर — 63
डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे

Study of FDI Inflow in India and Its Forecasting — 68
Mukesh Kumar Jain and Anurag Agnihotri

Human Resource Management a Competitive Advantage in the Era of Globalisation — 80
Dr. Rajeev Vashisht

Size and Growth of Firms — 92
Alok Dash

Study of the Working Capital Management in Manufacturing Firms — 100
Dr. Surender Singh

Guidelines for Contributors — 113

Scanned by CamScanner

मीरा : पुरूष दासता से मुक्ति का स्वर

डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे*

प्रस्तावना

आधुनिक और उत्तर आधुनिक युग अनेक आस्मितामूलक सवालों के साथ उपस्थित हुआ है। स्त्री की अस्मिता का सवाल इसमें एक बड़ा प्रश्न बनकर उभरा है और पूरी दुनिया में उभरा है। हालाँकि भारतीय परिप्रेक्ष्य में अतीत से वर्तमान तक सवालों की पृष्ठभूमि सीमोन द बोउवा की दृष्टि से भिन्न है परन्तु नारीवादी विचारधारा से कुछ भिन्न स्त्री समस्याएँ तो यहाँ भी रही हैं। इसलिए भारत में भी स्त्री विमर्श और नारीवादी विचारधारा को पर्याप्त स्पेस मिला है। भारत में समय–समय पर ऐसे संत–महापुरूष हुए जिन्होंने मानवता के पक्ष में झण्डे बुलंद किए, इनमें स्त्रियाँ भी पीछे नहीं रहीं। मीरा सहजो, दयाबाई आदि स्त्री संत (भक्त) कवयित्री भी हैं, साधक भी हैं और पुरूष सत्तात्मक समाज के बीच रहकर भक्ति के माध्यम से इन्होंने अपने होने की बड़ी स्पष्ट और मजबूत उद्‌घोषणा की है। मीरा के काव्य में पुरूष की दासता से मुक्ति का स्वर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

बीजशब्द – गिरधर नागर, हरि, अबिनासी, प्रभु, लाज, सरम, कुल की मरजादा, पिया, घनश्याम, चाकर, सेज, विरहिणी, जोगी, अँसुवन, दासि, म्हारा, राणा, विष को प्यालो,

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में मीराबाई की चर्चा कृष्णमार्गी सगुण भक्ति शाखा में भी होती है और रैदास की शिष्या के रूप में निर्णुण (ज्ञानमार्गी) भक्तिशाखा के अंतर्गत भी। हालाँकि अन्य संतों और भक्तों की तरह मीरा का जीवन परिचय भी अप्रामाणिक सूचनाओं पर आधारित है, का जन्म संवत 1555, संवत 1561 माना जाता है पर डॉ. सी. एल. प्रभात ने विभिन्न स्रोतों की छान–बीन उपरांत संवत 1561 को मीरा का जन्म निर्धारित किया है। साथ ही मीरा का निधन संवत 1603 माना गया है। (1)

मीरा के समय बाल विवाह का प्रचलन हो चुका था। संवत 1573 में उनका विवाह महाराणा साँगा के पुत्र कुँवर भोजराम के साथ हो गया। मीरा अपने पति के साथ सुखपूर्वक रहने लगी पर अल्प समय में ही संवत् 1575–1580 के बीच उनके पति का निधन हो गया। पाँच वर्ष बाद उनके पिता और ससुर भी नहीं रहें। संवत् 1588 में मीरा के देवर (साँगा के उत्तराधिकारी) रत्न सिंह को बूँदी के शासक सूरजमल ने मार डाला फिर विक्रमाजीत (राणा) को राजगद्‌दी मिली। (2)

यहाँ से मीरा का वैधव्य जीवन प्रारंभ होता है। एक–एक करके पति, पिता, ससुर, देवर की मृत्यु की घटनाएँ उन्हें गहरे घाव देती हैं। मीरा मेवाड़ छोड़कर वृन्दावन चली गई और अंतिम समय में वृन्दावन भी छोड़कर द्वारका चली गयीं। कहते हैं वह कृष्ण की मूर्ति में समा गई पर वस्तुतः वह ध्यानमय हो गई थीं।

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी शास. महाविद्यालय हसौद, जिला-जांजगीर-चांपा (छ.ग.)

Scanned by CamScanner

मीराँबाई का अर्थ (फारसी की मीरा के आधार पर) ईश्वर की पत्नी माना गया है। मीरा का अर्थ सुन्दर नदी या जलाशय भी है। मीराँ प्रधान और श्रेष्ठ का सूचक है। यह राजस्थान में सामान्यतः नाम के रूप में प्रचलित शब्द है। (3) मीरा ने कितने पद रचे थे यह प्रामाणिक रूप से कहना तो कठिन है पर मुंशी देवी प्रसाद ने मीरा की चार रचनाओं का उल्लेख किया है – 1. नरसीजी रो माहेरो, 2. गीत गोविन्द की टीका, 3. फुटकर पद, 4. राग सोरठा पर संग्रह। मीरा के पद गेय हैं और इसलिए एक प्रांत से दूसरे प्रांत में साधु–संतों, गायको द्वारा मौखिक रूप से प्रचारित–प्रसारित होते रहे। (4)

मीरा के भाव संसार को समझने के पूर्व मध्यकाल के सामन्ती परिवेश को समझना आवश्यक है जिसमें मीरा साँस ले रहीं थी। यह दौर राजनैतिक अस्थिरता का था जिसमें विदेशी आक्रमण, सांस्कृतिक संघर्ष, सामाजिक–आर्थिक डाँवाडोल की स्थिति थी। छुआछूत, जातिवाद प्रचलित था। शिक्षा का स्तर नीचा था। हालाँकि बड़े घरानों की स्त्रियाँ (मीरा आदि) पढ़ी लिखी थी इसके संकेत मिलते हैं फिर भी स्त्रियों व शूद्रों को संस्कृत भाषा पढ़ने की मनाही थी। दहेज प्रथा प्रारंभ हो चुकी थी और बाल विवाह की अनिवार्यता थी। (5) समाज में स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी, पुरूषसत्ता का वर्चस्व था, सम्पत्ति में वारिसाना या बँटवारे की अधिकार स्त्री को नहीं था, मनुस्मृति के अनुसार सामाजिक व्यवस्था थी, मुसलमान शासकों और उनके सैनिकों से सतीत्व की रक्षा की चिंता भयावह थी और बालविवाह व सती प्रथा के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण यही था। ग्रंथों में इस बात के पर्याप्त उल्लेख हैं कि प्रायः युवा विधवाओं को आर्थिक एवं शारीरिक स्तर पर अत्याचार झेलने पड़ते थे। शूद्रों में विधवा विवाह प्रायः आसान भी था पर राजपूत रियासतों में यह कठिन था। आठवीं शताब्दी से सती प्रथा में स्पष्ट वृद्धि दिखाई देती है जिनमें सर्वाधिक संख्या राजस्थान में थी। (6) यही नहीं हिन्दू परिवारों में कन्याओं को बचपन से ही यह सिखाया जाता था कि सती होना कुल गौरव के लिए श्रेष्ठ और स्त्रीधर्म परम्परा के अनुकूल है। (7) तभी तो विधवा स्त्रियाँ आग में जल जाने को भी तैयार रहती थी।

उस काल के संत, महंत, सामंत, साहित्य और आडियोलॉजी सभी स्त्री विरोधी थे। स्त्री के लिए धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वर्जनाएँ विकसित हो चुकी थीं। नारी नर्क का द्वारा, माया, ताड़न की अधिकारी घोषित हो चुकी थी। वही पुरूष की स्वेच्छाचारिता समाज स्वीकृत थी, वेश्याओं के सम्पर्क में रहना सम्पन्नता और प्रतिष्ठा की बात थी। ऐसे समय में व्यवस्था स्त्री विरोधी थी जिसमें घर–बाहर कहीं भी वह सुरक्षित नहीं थी। पिता, पति, पुत्र का संरक्षण उसके लिए अनिवार्य था।

विधवा के पास तीन विकल्प थे – पति की मृत्यु के बाद विधवा के रूप में परिवार पर निर्भर रहे, गलत रास्ता अपनाए या फिर पति साथ जिन्दा जले। सती प्रथा, जौहर प्रथा जोरों पर थी। (8) पुरूष के बनाए हुए इन तीनों विकल्पों को मीरा ने नकारते हुए अपने स्वतंत्र जीवन की उद्घोषणा की। न तो वह सती हुई, न गलत रास्ते (अनैतिक संबंधों की ओर) गई और न ही परिवार पर निर्भर रही, बल्कि घर–बार छोड़कर जोगिन बन गई। उसका सती नहीं होना पितृसत्ता के विरूद्ध एक बड़ा विद्रोह था फिर परिवार पर निर्भर नहीं रहना और अपने जीवन का निर्णय (जोगन बनने) स्वयं लेना, पुरूषसत्ता को एक तमाचा था। इनके अलावा सबसे बड़ी क्रांति थी अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा। क्योंकि हजारों साल से स्त्री का अस्तित्व मिटाने की साजिश की गई है वह केवल पुरूष की छाया बनकर रह गई है।

Scanned by CamScanner

इस सदी के महान दार्शनिक व क्रांतिकारी संत ओशो रजनीश भी मानतें हैं कि नारी का कोई अस्तित्व ही नहीं है। माँ का अस्तित्व है, बहन का अस्तित्व है, बेटी का अस्तित्व है, पत्नी का अस्तित्व है, नारी का कोई भी अस्तित्व नहीं है। जब तक स्त्री अपने अस्तित्व की घोषणा नहीं करती है, तब तक उसे आत्मा उपलब्ध नहीं हो सकती, तब तक वह छाया ही रहेगी। [9] मीरा पुरूष की छाया होने से इंकार करती है और एक स्वतंत्र नारी के रूप में अपने होने की घोषणा करती है यह एक बड़ा विद्रोह है। पुरूष वर्चस्ववादी समाज में पति के जीवित रहते अथवा विधवा होने पर भी पराये मर्द की ओर देखना पाप–अपराध माना जाता था, पति को ईश्वर के समकक्ष (पति–परमेश्वर) माना गया था ऐसे समय में मीरा पुरूष सत्ता का विरोध करती हुई कृष्ण से प्रेम का इकरार करती है, उस कृष्ण (परम पुरूष) को पति के रूप में स्वीकार करती है जो कि व्यवस्था से बगावत है –

"बस्याँ म्हारे णेणणमाँ नन्दलाल" की उक्ति समाज के ठेकेदारों को धता बताती है, उपेक्षा करती है। पुरूष सत्ता पर चोट करती हुई न केवल वह कृष्ण का वरण करती है बल्कि एक रानी, दासी बनने को लालायित है – "मीरा के प्रभु हरि अविनासी, चेरी भई बिन मोल"

यह लालसा न केवल पुरूष के अंहकार को चोट करती है, बल्कि जाति व्यवस्था (रानी–दासी) पर भी प्रहार करती है।

किसी भी स्त्री का सबसे नाजुक पक्ष उसका कौमार्य है, इसलिए उसके चरित्र को लेकर पुरूष मन सदा सशंकित रहता हैं। पुरूष चाहता है कि वह दूसरी स्त्रियों को भोगे पर उसकी स्त्री चरित्रवान बनी रहे, उसकी शुचिता सदैव पुरूष के लिए महत्वपूर्ण रही है। ऐसे पितृसत्तात्मक समाज में मीरा स्वयं को जनम–जनम की कुआँरी घोषित करती है –

मोती चौक परावाँ णेणाँ, तण मण डाराँ वारी।
चरण सरण री दासी मीरा, जणम जणम री क्वाँरी।।

भारतीय परम्परा में पति की एकनिष्ठ सेवा करने वाली पत्नी ही आदर्श मानी गई पर मीरा उस स्थापित आदर्श के मानक को तोड़ते हुए कृष्ण को पति मानती है यही नहीं उससे विवाह भी कर लेती है। वहीं पुरूष समाज को स्वयं के कुँवारी होने का सर्टिफिकेट खुद जारी करती है उसे न तो वैधव्य की निराशा स्वीकार है, न पुरूष का संरक्षण, न ही पितृसत्तात्मक परिवार। इस तरह पुरूष की बनाई मर्यादा (व्यवस्था) को वह स्त्री होने की गरिमा से रौंद डालती है।

स्त्री के लिए पुरूष प्रधान समाज ने लज्जा (लोक लाज) को आभूषण के रूप में अनिवार्य व्यवस्था दी है। जो नारी लोकलाज का पालन करती है वह आदर्श मानी जाती है। मीरा राजमहल की चार दीवारी तोड़कर बाहर निकलती है, साधुओं (पराये पुरूषों) के बीच संगत में बैठती है, पैरों में घुँघरू बाँधकर नाचती है और सारे लोकलाज को तिलांजति दे देती है। यह विद्रोह है, बगावत है, स्त्री मुक्ति का अव्यक्त मुखरित स्वर है। उसके 'पग घुघरू बाँध मीरा नाची रे' के घुंघरू चीख–चीखकर स्त्री मुक्ति की आवाज बुलंद कर रहे थे, मानो कह रहें हों – "मुक्त करो नारी को मानव ... चिरवंदिनी नारी को"। मीरा ने प्रेम के अद्भुत गीत गाए हैं आज भी भारतीय समाज स्त्री की प्रेम की स्वतंत्रता का पक्षधर नहीं है, नारी प्रेम की स्वीकारोक्ति करे तो उसे चरित्रहीन माना जाता रहा है। ऐसे समाज में वह खुलकर बार–बार अपने इष्ट के प्रेम की घोषणा करती है –

Scanned by CamScanner

"माई साँवरे रँग राँची।
साज सिंगार बाँध पग घूँघर, लोकलाज तज णाँची।"

कृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम की अभिव्यंजना भी वहाँ है –

"म्हाराँ री गिरधर गोपाल दूसराँ णाँ कुयाँ"

उसमें इतना साहस है कि प्रेम में जो भी होगा, उसकी परवाह नहीं करती –

"मीराँ री लगण लग्याँ होणा हो जो हूयाँ"

क्योंकि वही उसका सच्चा प्रेमी है–

"मैं तो गिरधर के घर जाऊँ
गिरधर म्याँरो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ
रैण पड़ै तब ही उठि जाऊँ, भोर भये उठि आऊँ
रैण दिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि लुभाऊँ।" (10)

समाज का पुरूष वर्ग स्त्री के रहन–सहन, परिधान एवं श्रंगार के नियम गढ़ता है। स्त्री के गोरे गाल, पतले ओंठ, सुराहीदार गर्दन, उन्नत उरोज, पतली कमर, चिकनी जाँघ, पाँव की बिछिया, गले का हार, कमर की करधनी, कानों की बाली, होठों की लाली सबकुछ पुरूष द्वारा आविष्कृत और प्रायोजित है। पुरूष के बनाए कए मायाजाल में स्त्री अपनी इमेज बुन रही है। पुरूष उसके लिए श्रृंगार और सौन्दर्य के मानक–प्रतिमान गढ़ रहा है और भ्रमित स्त्री उस मकड़जाल में फँसकर अपनी अस्मिता खो रही है। लेकिन मीरा जागरूक स्त्री है। वह पुरूष के बनाए सेटअप से बाहर निकल चुकी है इसलिए विधवा का जीवन नहीं जीती बल्कि जोगन की श्रृंगार करती है, घूँघर बाँधती, इकतारा पकड़ती साध–संगत करती, भजन गाती,, मस्त होकर नाचती और अपना जीवन अपनी मर्जी से जीती है। वह बदनामी की फिक्र नहीं करती, बल्कि कहती है –

"राणो म्हाँने या बदनामी लगे मीठी।
कोई निदो कोई बिन्दो मैं चलूँगी चाल अपूठी।" (11)

विद्रोह में विनम्रता भी है और गजब का कान्फिडेन्स भी दिखाई दे रहा है।

मीरा न केवल पुरूषवर्चस्व को तोड़ती है, बल्कि उसकी सत्ता को चुनौती भी देती है। वह राणा को कहती है कि तुम्हारी व्यवस्था कूड़े कचरे जैसा है, मुझे (स्त्री) को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता –

"नहिं सुख भावै थारो देसलड़ो रँगरूड़ो
थाँरे देसाँ में राणा साध नहीं छै, लोग बसै सब कूड़ो"

वह भक्ति को माध्यम बनाकर अहंकारी पुरूष सत्ता के खिलाफ जंग छोड़ती है। पुरूष सत्ता का प्रतीक राणा मीरा रूपी स्त्री आंदोलन को कुचलने के लिए जहरीला सर्प भेजता है, विष का प्याला भेजता है लेकिन मीरा पर उनका कोई असर नहीं पड़ता। मीरा का विश्वास संसार के पुरूषों पर हो या न हो परंतु उस परम पुरूष पर दृढ़ विश्वास है। परम पुरूष के समक्ष वह पुरूष को उसकी औकात भी बता रही है।

पुरूष ने धर्म के जाल–जंजाल आडम्बर में स्त्री को फाँस रखा है। नारीवादी विद्वान विचारक मानते हैं कि धर्म–सत्ता पूरी की पूरी पुरूष के अधिकार में है, स्त्री असमानता की जड़ में धर्म है तथा धर्म और जाति

Scanned by CamScanner

से पितृसत्ता का चोली–दामन का रिश्ता है। (12) इस धर्म का व्यापार पाखण्ड और आडम्बर से चलता है। मीरा इसके प्रति जागरूक है, वह कबीर और गोरख की तरह आडम्बर का खुला विरोध करती है –

"नित नहाने से हरि मिलै तो, जल जन्तु होई
फल मूल खाके हरी मिलै तो, बाँदर–बाँदरा होई
तिरन भखन से हरी मिलै तो, बहुत मृगी अजा
स्नेह छोड़ के हरी मिलै तो, बहुत हैं खोजा।" (13)

इस तरह वह पुरूष की दासता का विरोध करती है।

मध्यकाल के सामंती परिवेश में स्त्री को घूंघट से बाहर निकल पाना कठिन था उस दौर में पुरूष सत्ता की सीमाओं को तोड़कर खुली हवा में साँस लेना, स्त्री मुक्ति के स्वर को मजबूती से उठाना, पुरूष सत्ता को चुनौती देना किसी आश्चर्य से कम नहीं। वह अँसुवन जल से निराकार के प्रेम बेलि को सींचती, लोकलाज खोती, कुलनाशी की पदवी लेती, बावरी का नाम कमाती, सूली ऊपर सेज पिया को मिलने जाती, पीर मिटाने साँवलिया वैद्य (गोविंद) को आमंत्रित करती भक्ति के अस्त–शस्त्र से पुरूष दासता से स्त्री मुक्ति के सार्थक प्रयास करती है। स्त्री मुक्ति की दिशा में स्त्री विद्रोह का भारतीय चेहरा संभवतः मीरा है।

सन्दर्भ सूची

1 शर्मा, राम किशोर एवं सुजीत कुमार शर्मा. *मीराँबाई की सम्पूर्ण पदावली*, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2013 पृष्ठ 13
2 वही, पृष्ठ 13–14
3 वही, पृष्ठ 17
4 वही, पृष्ठ 18
5 कस्तवार, रेखा. *स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ*, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 65
6 वही, पृष्ठ 66
7 वही, पृष्ठ 67
8 वही, पृष्ठ 66
9 ओशो, *नारी और क्रांति (प्रवचन)*, हिन्द पाकेट बुक्स प्रा. लि. नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ 98–99
10 शर्मा, राम किशोर एवं सुजीत कुमार शर्मा. *मीराँबाई की सम्पूर्ण पदावली*, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2013, पृष्ठ 85
11 वही, पृष्ठ 95
12 गुप्ता, रमणिका. *स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास*, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ 47–48
13 शर्मा, राम किशोर एवं सुजीत कुमार शर्मा. *मीराँबाई की सम्पूर्ण पदावली*, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2013, पृष्ठ 248

Scanned by CamScanner